ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

हिंदी साहित्य पर बौध्द धर्म का प्रभाव

प्रा. रोहिणी रामचंद्र साळवे

पीएच्. डी. शोध छात्रा,

हिंदी विभाग,

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

मो. नं. -9404998582

बौध्द धर्म की स्थापना ईसा पूर्व 6 वीं भाताब्दी में महात्मा बुध्द द्वारा की गई हैं। महात्मा बुध्द का जन्म 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी, नेपाल में हुआ। तथा उन्हें बुध्द गया, बिहार में ज्ञानप्राप्ती हुई। बौध्द धर्म का विस्तार समुचे भारत के साथ-साथ नेपाल, थाईलैण्ड, जपान, भूटान, श्रीलंका, हांगकांग जैसे अनेक देश-विदेशों में हुआ। बौध्द धर्म एक सरल, अहिंसावादी तथा लोकप्रिय धर्म हैं। इसी बौध्द धर्म ने पूरे विश्व को करुणा, अंहिसा और सत्य का संदेश दिया। तत्कालीन समाज की भाशा पाली में महात्मा बुध्द ने अपने ज्ञान का संदेश लोगों तक पहुंचाया। बौध्द भिक्षुओं ने संस्कृत भाशा में महात्मा बुध्द के ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया। बौद धर्म से अनेक कलाओं का विकास हुआ, जिसमें मूर्तिकला एक हैं। सम्राट अशोक के समय से वास्तुकला में मूर्तियों का उपयोग किया गया। कई चैत्य, स्तूपों और स्तंभों का निर्माण सम्राट अशोक के काल में हुआ।

बौध्द मठो का उपयोग शिक्षा के लिए भी किया जाता था। नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, नागार्जुनकोंडा आदि विश्वविदयालयों के माध्यम से बौध्द धर्म ने शिक्षा को बढावा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

बौध्द धर्म का गहरा प्रभाव देश-विदेश के साहित्य पर आज भी देखा जाता हैं। हिंदी साहित्य पर भी बौध्दधर्म का प्रभाव आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक बना रहा हैं। हिंदी के प्रमुख जाने-माने साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त, रामचंद्र भुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी, निराला, महादेवी वर्मा, जयश्री रॉय आदि कई साहित्यकारों के साहित्य में बौध्द धर्म की झलक दिखाई देती हैं।

हिंदी के प्रसिध्द आलोचक रामचंद्र भुक्ल ने एडविन अर्नाल्ड द्वारा रचित बुध्द जीवन रुपरेखा 'द लाईट ऑफ एशिया' का हिंदी अनुवाद 'बुध्दचरित्र' के नाम मे किया हैं। राश्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'यशोधरा' नामक महाकाव्य का निर्माण किया। यशोधरा महात्मा बुध्द की पत्नी थी। 'सखि वे मुझसे कहकर जाते' नामक कविता में सिध्दार्थ गौतम बुध्द गृहत्याग करके अचानक चले जाते हैं, तब उनकी पत्नी यशोधरा अपनी करुण गाथा को अपनी प्रिय सखि के सामने अत्यंत संवेदना के साथ प्रस्तुत करती हैं। यशोधरा के मन की पीडा को सखि के सामने प्रस्तुत करने का प्रसंग चित्रित करते हुए मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं-

''जाये, सिध्दि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालंभ दूँ मैं किस मुख सें?
आज अति वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते!''।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत कविता में स्त्री मन की सुलभ भावनाओं को गुप्त जी अत्यंत संवेदना के साथ पूरी कविता में अभिव्यक्त करते है।

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की रचनाओं में बौध्द धर्म में निहीत करुणा भाव तथा दु:खवाद सिध्दांत का स्वरुप स्पश्ट रुप में देखा जाता है। महादेवी वर्मा खुद को 'दुख की बदली' संबोधित करते हुए लिखती हैं-

''मै क्षितिज-भष्कुटि पर घिर धूमिल

चिन्ता का भार बनी अविरल

रज कण पर जल कण हो बरसी

नव जीवन अंकुर बन निकली''[2]

रांगेय राघव द्वारा लिखित उपन्यास 'चीवर' एक ऐसा ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें राजनीतिक सत्ता संघर्ष का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास पर बौध्द धर्म का प्रभाव स्पष्टता से देखा जाता हैं। उपन्यास की स्त्री पात्र राजश्री सांसारिक प्रपंचो की छलना मे जीती दिखाई है। समस्त राजसुखों के होते हुए भी वह प्रसन्न नहीं हैं। भगवान बुध्द के पद्चिहनों पर चलने की उसकी भावना आध्यात्मिकता में परिवर्तित होने लगती हैं। राजश्री के चीवर धारण कर भिक्षुणी बनने का प्रसंग आध्यात्मिक जिज्ञासा के अंन्तईन्द्व को दिखाता है। वह गंभीरता से कहती हैं, ''भन्ते! मुझे चीवर दें। मै भिक्षुणी होना चाहती हूँ।''[3] यहां राजश्री में सांसारिक मोह माया से दूर आधात्मिक मार्ग पर चलने का भाव स्पश्ट रुप से दिखता है। वह सत्य की खोज करके जीवन को सुख'-दु:ख के मार्ग पर ले जाना चाहती है। प्रस्तुत उपन्यास में राजश्री बौध्द धर्म से प्रभावित एक चरित्र है।

ऐतिहासिक उपन्यासकार चतुरसेन भाास्त्री ने 'वैशाली की नगरवधु'[4] नामक अपनी रचना में बौध्दकालीन राजनर्तकी आम्रपाली को चित्रित किया हैं। आम्रपाली सुंदर होने के कारण वैशाली नगर के नियमानुसार उसे पूरे नगर की वधू घोषित किई जाती है। इस कृति में तत्कालिन सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितिओं का चित्रण हैं। इसमें बौध्द धर्म का विस्तार तथा लोगों पर पडा प्रभाव परिलक्षित होता हैं। बौध्द धर्म के प्रभाव से सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों मे बदलाव यहां दिखाई देता है। भगवान बुध्द के विचारों से स्वयं, आम्रपाली बौध्द धर्म की भिक्षुणी बनने को तैयार होती हैं।

मेहन राकेश का प्रसिध्द नाटक 'लहरों के राजहंस'[5] पर भी बौध्द धर्म का प्रभाव दिखाई देता हैं। इसका मुख्य आधार मनुष्य की बेचैनी तथा अंन्तईन्द्व हैं। इस नाटक का मुख्य पात्र नंद गौतम बुध्द का सौतेला भाई हैं, जो मुक्ति की तलाश में हैं। नंद मानसिक द्वन्द्व मे बेचैन हैं जब वह महात्मा बुध्द के विचारों को सुनते हैं तब उससे प्रभावित होकर भिक्षु बनना चाहते हैं। नंद की पत्नी सुंदरी एक रुपगर्विता स्त्री हैं। नंद सुंदरी के साथ होते हैं, तो सुंदरी के प्रभाव में होते हैं। इन दो विभिन्न,स्थितियों के बीच उनका मानसिक संघर्श भाुरु होता हैं। नंद की पत्नी सुंदरी यशोधरा की रुक्षता को बुध्द के गृहत्याग को जिम्मेदार मानती हैं। गौतम बुध्द, यशोधरा, नंद और सुंदरी पर आधारित इस नाटक पर महात्मा बुध्द के विचारों का गहरा प्रभाव दिखता हैं। प्रस्तुत नाटक में माहेब राकेश ने नंद और सुंदरी जैसे ऐतिहासिक पात्रो को आधुनिक रुप में चित्रित किया हैं। इसमें नंद के माध्यम से आधुनिक मनुश्य की द्वन्द्वात्मक स्थिति को चित्रित करणे का सफल प्रयास हैं, परंतु इन सब मे गौतम बुध्द तथा बौध्द धर्म के विचारों का भी प्रभाव यहां दिखता हैं।

इक्कीसवी सदी के हिंदी साहित्यपर भी बौध्द धर्म का प्रभाव है। युवा साहित्यकार जयश्री रॉय की कहानी 'निर्वाण' बौध्द धर्म से प्रभावित हैं। कहानी का पात्र आकाश थायलैण्ड के सांस्कृतिक जीवन पर डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने थायलैण्ड आता है, यह मंदिरों तथा बौध्द स्तूपों का देश हैं। यहां उसकी पहचान माया नामक युवति से होकर वह एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। एक दिन वह रेस्तरॉ में खाने बैठते हैं। आकाश वेज मेमो मंगाता हैं, तो माया चिकन सैंडविज। आकाश अपने मन में ही सोचता हैं, ''इस दुनिया में भूख मिटाने के लिए बहुत कुछ उपलब्ध है, फिर क्यों नाहक किसी की जान ली जाये।''[6]

यहां आकाश पर बौध्द धर्म के अहिंसा तत्व का प्रभाव दिखाई देता हैं। इतना ही नही आगे चलकर आकाश माया

Scanned with CamScanner

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

से किसी कारण वश बिछडता है और उसकी मुलाकात युवा बौध्द भिक्षु नकुल बोधिसत्व से होती हैं। माया के बिना आकाश विरक्ती का अनुभव करता है और इस कारण एक महिना नकुल बोधिसत्व के साथ ही रहता हैं। इन दिनों वह नकुल बोधिसत्व से काफी प्रभावित होता है। नकुल बोधिसत्व बौध्द धर्म के विचारों का प्रचार-प्रसार करते थे। उनका कहना था, ''हमें हर मोह-माया से दूर रहना होता है, न कुछ जोडना और न कुछ साथ ले जाना! हर अर्थ में अकिंचन!''[7] बोधिसत्व नकुल जानते थे, आकाश का जीवन मोह-माया से जुडा है इसलिए वह जीवन के सुख-दुखों को जानने के लिए आकाश को वापस संसार मे लौटने को कहते हैं। आकाश माया को ढूंढता है, वह अपनी मजबूरियों से देहव्यापार कर रही थी। फिर भी आकाश उसे स्विकारने की बातें कर वापस अकेला ही लौट आता है। वह भांति की खोज करता है। घूमते हुए वह बौध्दगया पहुंचता है।

बौध्दगया में महात्मा बुध्द को ज्ञानप्राप्ती हुई थी। वहां घूमते हुए आकाश की मुलाकात फिर एक बार बोधिसत्व नकुल से होती हैं। बोधिसत्व नकुल आकाश के सारे प्रश्नों के समाधान करते हैं। बौध्दधर्म में निहीत ज्ञान को समझकर मानो आकाश को भी ज्ञानप्राप्ती होती है। माया से मुक्ति पाने के लिए कठोर साधना की आवश्यकता होती हैं, परंतु यहा आकाश की माया को लेकर बोधिसत्व नकुल कहते है, ''तुम्हारी लडाई बहुत अलग है आकाश! माया तुम्हारा बंधन नही, तुम्हारी मुक्ति है! प्रेम से भागा नहीं जाताकृकृ।''[8]

आकाश के लिए बोधिसत्व का यह प्रवचन उसका निर्वाण था। वह माया को अपने साथ लाने के लिए निकल पडता हैं। प्रस्तुत कहानी बौध्दधर्म से काफी प्रभावित कहानी हैं। बौध्द धर्म तथा तथागत बुध्द के विचारों पर यह कहानी चलती हैं। 528 ईसा पूर्व बुध्दगया में बोधिवृक्ष के नीचे तथागत गौतम बुध्द को ज्ञानप्राप्ती हुई थी। उसी जगह वैसा ही अदभूत अनुभव इक्कीसवी सदी के आकाश को प्राप्त होता हैं। साहित्य को लेकर दावे के साथ आज भी, यह कहां जायेगा की, बौध्द धर्म के विचारों को पूरे विश्व ने स्विकार किया हैं और हिंदी साहित्य पर भी इस धर्म का प्रभाव आदिकाल से लेकर आधुनिक काल में बना रहा है। पूरे विश्व के साथ हिंदी साहित्य भी सत्य, अंहिसा, भील, करुणा जैसे महान बौध्द तत्वों की राह पर मार्गक्रमन करता रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ -

1. सखि वे मुझसे कहर जाते-मैथिलीशरण गुप्त
2. सांध्यगीत- मैं नीर भरी दुख की बदली- महादेवी वर्मा
3. चीवर-संगेय राघव
4. वैशाली की नगरवधू-चतुरसेन शास्त्री
5. लहारों के राजहंस-मोहन राकेश
6. मोहे रंग दो लाल-निर्वाण, जयश्री रॉय, पृ. 71
7. वही, पृ. 75
8. वही, पृ. 86

Scanned with CamScanner